भारतीय मिट्टियों का वर्गीकरण

Classification of Indian Soils.

भारत विशाल देश है अतः यहाँ विभिन्न प्रकार की मिट्टियाँ पाई जाती हैं। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) ने 1953 में अखिल भारतीय भूमि उपयोग तथा मृदा सर्वेक्षण संगठन (All India land use and soil survey organisation) की स्थापना की जिसने भारतीय मिट्टियों को निम्न वर्गों में बाँटा –

1. जलोढ़ मिट्टी (Alluvial Soils)
2. काली मिट्टी (Black soils)
3. लाल मिट्टी (Red soils)
4. लेटेराइट तथा लेटेराइटिक मिट्टियाँ (Laterite and Lateritic Soils)
5. वन तथा पर्वतीय मिट्टियाँ (Forest and mountain soils)
6. शुष्क एवं मरुस्थलीय मिट्टियाँ (Arid and Desert soils)
7. लवण तथा क्षारीय मिट्टियाँ (Saline and Alkaline soils)
8. पीट तथा दलदल युक्त मिट्टियाँ।

Scanned with CamScanner

1. जलोढ़ मिट्टी :-

इन्हें काँप मिट्टी भी कहा जाता है। (डेल्टाई) यह मिट्टियाँ नदियों द्वारा लाकर नदी-घाटियों बाढ़ के मैदानों तथा डेल्टाई प्रदेशों में बिछाई जाती हैं। यह अधिक उपजाऊ मिट्टी है। जलोढ़ मिट्टियाँ भारत का सबसे बड़ा मृदा समूह है। यह 15 लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैली हुई है। इस प्रकार ये भारत के लगभग 45.6 प्रतिशत भाग पर वितरित है। गंगा-सतलज का मैदान इसी मिट्टी का बना हुआ है। इसके अलावे महानदी, गोदावरी, कृष्णा एवं कावेरी के डेल्टाई-भाग असम घाटी, गुजरात तथा पश्चिमी तटीय मैदान में भी पाई जाती है।

2. काली मिट्टियाँ :-

इन्हें रेगुर भी कहते हैं। इन मिट्टियों का निर्माण ज्वालामुखी विस्फोट से हुआ है जिससे इनमें कई प्रकार के खनिज विद्यमान हैं। इनमें लोहा, मैग्नीशियम, चूना तथा एल्यूमिनियम प्रमुख हैं। इस प्रकार यह बहुत उपजाऊ मिट्टी है। यह मिट्टी कपास की कृषि के लिए बहुत ही उपयोगी है इसलिए इसे काली कपास मिट्टी भी कहते हैं। यह दक्षिणी भारत के पाँच लाख वर्ग कि.मी. क्षेत्र में फैली है। इसका विस्तार पश्चिमी एवं मध्यवर्ती- मध्य प्र०, महाराष्ट्र

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

तथा गुजरात के अधिकांश भाग, कर्नाटक का उत्तरी भाग तेलंगाना तथा आन्ध्र प्रदेश के पश्चिमी भाग में है।

यह मिट्टी चिपचिपी होती है और इसमें नमी धारण करने की पर्याप्त क्षमता होती है। इसके लिए सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती। ग्रीष्म ऋतु में यह मिट्टी सूख जाती है और इसमें दरारें पड़ जाती हैं, मिट्टी के कण टूटकर दरारें में भरने लगते हैं और मिट्टी बारीक हो जाती है। रंग के आधार पर कई रंगोंवाली होती है; जैसे, गहरी काली मिट्टी, मध्यम काली मिट्टी हल्की काली मिट्टी तथा काली व लाल मिश्रित मिट्टी।

③ लाल मिट्टी :- इस प्रकार की मिट्टियाँ मध्य प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र से धुर दक्षिण तक पायी जाती हैं जो 2 लाख वर्गमील क्षेत्र में विस्तृत है। ये मिट्टियां आन्ध्र प्रदेश तेलंगाना और मध्य प्रदेश के पूर्वी भाग, बिहार के दक्षिणी भाग एवं झारखण्ड के छोटानागपुर के पठार पर; पश्चिम बंगाल के वीरभूमि, बाँकुड़ा और मिदनापुर जिलों में, मेघालय की खासी जयंतिया और गारो पहाड़ियों में, नागालैण्ड में; UP में हमीरपुर (UP) मिर्जापुर, बाँदा और झांसी जिले में, राजस्थान के अरावली पर्वत के पूर्वी क्षेत्रों में, द० पूर्वी महाराष्ट्र

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

कर्नाटक और तमिलनाडु के कुछ भागों में मिलती हैं
लाल मिट्टियों का निर्माण प्राचीन खोंडार
तथा रूपांतरित चट्टानों के अपक्षय एवं अपरदन
से हुई है। इसमें प्रायः बाजरा पैदा होता है।

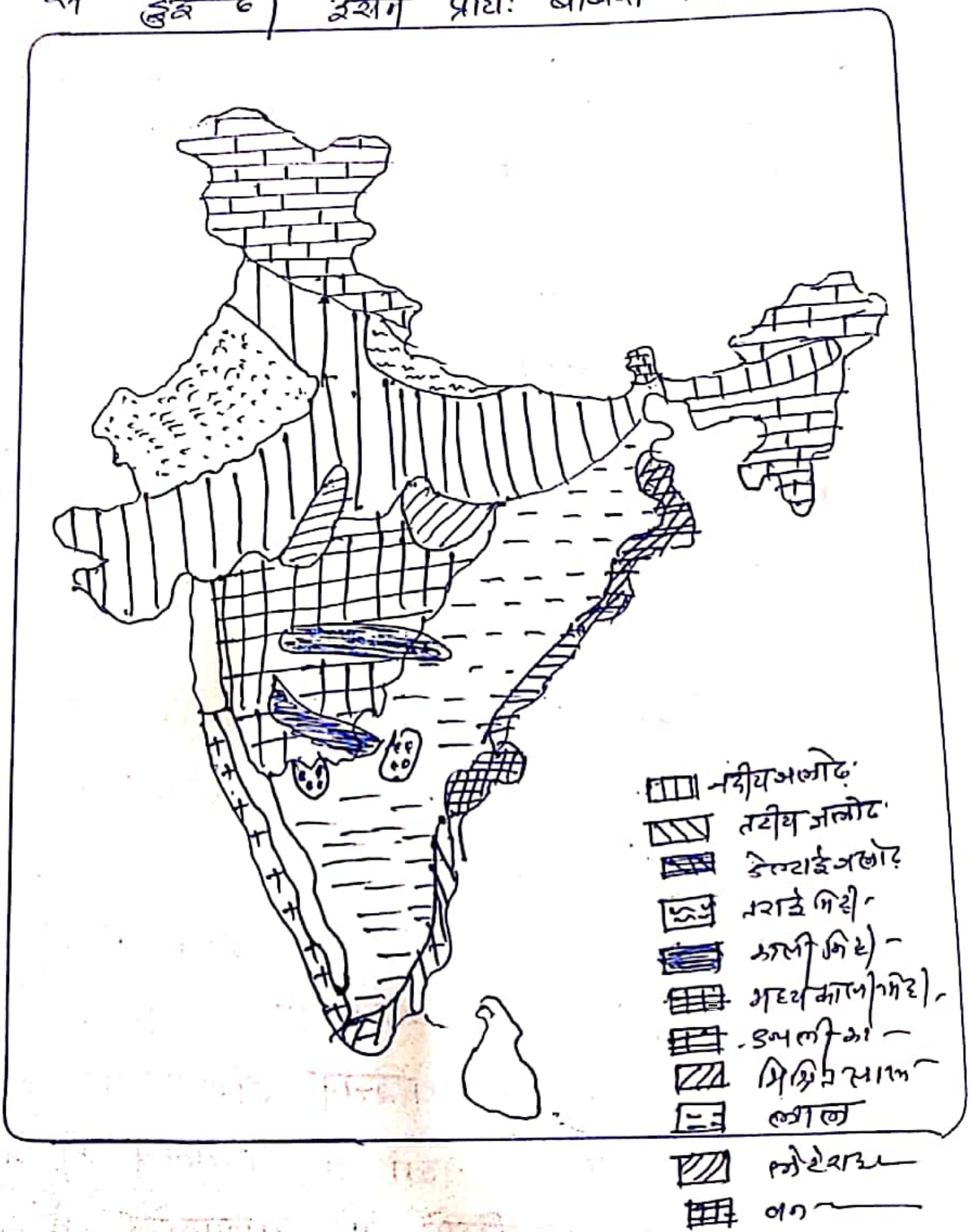

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

ये मिट्टियाँ विशिष्ट प्रकार की ईंटिया लाल रंग की होती हैं।
ये कृषि के लिए अधिक उपयोगी नहीं हैं, परन्तु इसमें घास और झाड़ियाँ खूब उगती हैं। ये मिट्टियाँ पश्चिमी-घाट, छोटानागपुर पठार, तमिलनाडु, आन्ध्र प्रदेश, तेलंगाना और असम के पर्वतीय क्षेत्रों में मिलती हैं। भवन निर्माण के लिए उपयोगी होती हैं।

5. **वन तथा पर्वतीय :-**

ये मिट्टियाँ पर्वतीय भागों के वनाच्छादित क्षेत्रों में पाई जाती हैं। यह भारत के 8.67% भाग पर ~~मिलती है~~। हिमालय के पर्वतीय भागों में पाई जाती हैं। जम्मू कश्मीर, हिमाचल, उत्तराखण्ड, सिक्किम तथा अरुणाचल प्रदेश में इन मिट्टियों का विस्तार है।

6. **शुष्क एवं मरुस्थलीय मिट्टी :-**

ये मिट्टियां 50 cm से कम वार्षिक वर्षा वाले इलाकों में मिलती हैं। भारत और 4.3% भाग पर फैली है। इसकी मिट्टी में रेत की मात्रा अधिक और ह्यूमस कम पाए जाते। ये मिट्टियाँ राजस्थान, दक्षिण-पश्चिम पंजाब तथा उत्तर-पश्चिम हरियाणा में पाई जाती है।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

7. **लवण तथा क्षारीय मिट्टी :-** बिहार, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान तथा महाराष्ट्र के अपेक्षाकृत शुष्क भागों में लवण तथा क्षारीय मिट्टियां पाई जाती हैं। इन्हें रेह, कल्लर, ऊसर, काली, थूर चोपन आदि कई नामों से पुकारा जाता है। नहरों द्वारा सिंचित तथा उच्च भूमिगत जल स्तर वाले क्षेत्रों में केशिका क्रिया द्वारा भूमिगत लवण धरातल पर आ जाते हैं और मिट्टी को अनुपजाऊ बना देते हैं।

8. **पीट तथा दलदल युक्त मिट्टी :-** पीट मिट्टियाँ अधिक आर्द्रता वाले क्षेत्रों में अधिक जैव पदार्थ के जमा होने से बनती हैं। इसमें घुलनशील लवण अधिक होते हैं और जैव पदार्थ 10 से 40% तक होता है। ये मिट्टियाँ मुख्य रूप से पश्चिमी तटीय मैदान में पाई जाती है। ओडिशा तमिलनाडु के तट तथा पश्चिम बंगाल के सुंदरवन क्षेत्र में भी ये मिट्टियाँ पाई जाती हैं।